Neeb Karori Baba ji Ki Vinay Chalisa

मैं हूँ बुद्धि मलीन अति, श्रद्धा भक्ति विहीन।
करूं विनय कछु आपकी, हौं सब ही विधि दीन।
जै जै नीब करौरी बाबा | कृपा करहु आवै सदभावा ॥

कैसे मैं तव स्तुति बखानूँ | नाम ग्राम कछु मैं नहिं जानूँ ॥
जापै कृपा दृष्टि तुम करहु | रोग शोक दुःख दारिद हरहु ॥

तुम्हरौ रूप लोग नहिं जानै। जापै कृपा करहु सोई भानैं ॥
करि दै अरपन सब तन मन धन।पावै सुक्ख अलौकिक सोई जन॥

दरस परस प्रभु जो तव करई। सुख सम्पति तिनके घर भरई ॥
जै जै संत भक्त सुखदायक। रिद्धि सिद्धि सब सम्पति दायक | |

तुम ही विष्णु राम श्री कृष्णा। विचरत पूर्ण कारन हित तृष्णा ॥
जै जै जै जै श्री भगवंता। तुम हो साक्षात भगवंता ॥

कही विभीषण ने जो बानी। परम सत्य करि अब मैं मानी ॥
बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता।सो करि कृपा करहिं दुःख अंत ॥

सोई भरोस मेरे उर आयो। जा दिन प्रभु दर्शन मैं पायो ॥
जो सुमिरै तुमको उर माहीं। ताकी विपति नष्ट हवे जाहीं ॥

जै जै जै गुरुदेव हमारे। सबहि भाँति हम भये तिहारे ॥
हम पर कृपा शीघ्र अब करहूं। परम शांति दे दुःख सब हरहूं ॥

रोग शोक दुःख सब मिट जावे। जपै राम रामहि को ध्यावें ॥
जा विधि होइ परम कल्याणा। सोई सोई आप देहु वारदाना ॥

सबहि भाँति हरि ही को पूजें। राग द्वेष द्वंदन सो जूझें ॥
करैं सदा संतन की सेवा। तुम सब विधि सब लायक देवा ॥

eAstroHelp
Your Astrology Helpline

सब कछु दै हमको निस्तारो । भव सागर से पार उतारो ।।
मैं प्रभु शरण तिहारी आयो । सब पुण्यं को फल है पायो ।।

जै जै जै गुरुदेव तुम्हारी । बार बार जाऊं बलिहारी ।।
सर्वत्र सदा घर घर की जानो । रूखो सूखो ही नित खानों ।।

भेष वस्त्र हैं सादा ऐसे । जानेंनहिं कोउ साधू जैसे ।।
ऐसी है प्रभु रहनि तुम्हारी । वाणी कहौ रहस्यमय भारी ।।

नास्तिक हूँ आस्तिक हवे जावें । जब स्वामी चेटक दिखलावें ।।
सब ही धर्मनि के अनुयायी । तुम्हें मनावें शीश झुकाई ।।

नहिं कोउ स्वारथ नहिं कोउ इच्छा।वितरण कर देउ भक्तन भिक्षा।।
केहि विधि प्रभु मैं तुम्हें मनाऊँ । जासों कृपा-प्रसाद तब पाऊँ ।।

साधु सुजन के तुम रखवारे । भक्तन के हौ सदा सहारे ।।
दुष्टऊ शरण आनि जब परई । पूरण इच्छा उनकी करई ।।

यह संतन करि सहज सुभाऊ । सुनि आश्चर्य करइ जनि काऊ ।।
ऐसी करहु आप अब दाया । निर्मल होइ जाइ मन और काया ।।

धर्म कर्म में रुचि होय जावै । जो जन नित तव स्तुति गावै ।।
आवें सद्गुन तापे भारी । सुख सम्पति सोई पावे सारी ।।

होइ तासु सब पूरन कामा ।अंत समय पावै विश्रामा ।।
चारि पदारथ है जग माहीं । तव प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ।।

त्राहि त्राहि मैं शरण तिहारी ।हरहु सकल मम विपदा भारी ।।
धन्य धन्य बड़ भाग्य हमारो । पावैं दरस परस तव न्यारो ।।

कर्महीन अरु बुद्धि विहीना। तव प्रसाद कछु वर्णन कीना ।।
श्रद्धा के ये पुष्प कछु, चरनन धरे सम्हार ।
कृपा-सिन्धु गुरुदेव तुम, करि लीजै स्वीकार ।।”

eAstroHelp
Your Astrology Helpline